RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ई-पाठशाला कार्यक्रम

CLASS 10th SST

राजनीति विज्ञान

संघवाद
Federalism

RAPID REVISION



संघवाद

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज भाषाओं की संख्या है?

अ 21

ब 22

स 20

द 24

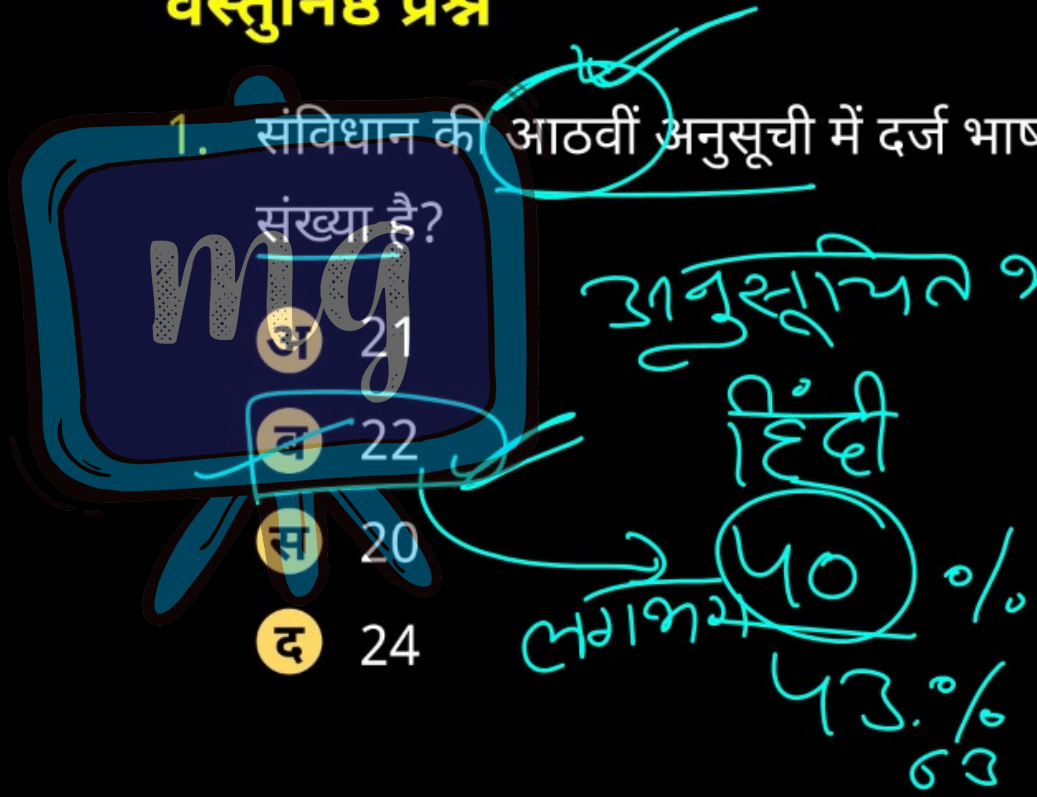

संघवाद

2. निम्नलिखित में से किस राज्य को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 371 के तहत विशेष शक्तियां प्राप्त है?

अ असम

ब मिजोरम

स नागालैण्ड

द ये सभी (द)

संघवाद

3. संघात्मक शासन प्रणाली में अधिकारों का विभाजन होता है?

अ केन्द्र एवं राज्यों के बीच

ब एक राज्य एवं अन्य राज्यों के बीच

स व्यवस्थापिका एवं कार्यपालिका के बीच

द व्यवस्थापिका एवं न्यायापालिका के बीच

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

संघवाद

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर
A केंद्र

4. निम्न में से कौनसा विषय समवर्ती सूची में शामिल है?

- अ पुलिस
- ब कृषि
- स रक्षा
- द शिक्षा

सूचियाँ

संघ सूची (केंद्र)
- बैंकिंग
- संचार

राज्य सूची (राज्य)
- कृषि
- सिंचाई

समवर्ती सूची (केंद्र-राज्य)
शिक्षा, वन

संघवाद

5. नगर निगम के अध्यक्ष को कहा जाता है-

अ मेयर

ब सभापति

स राज्यपाल

द सरपंच

बड़े शहरों (जनसंख्या)

संघवाद

6. शासन की किस व्यवस्था में सरकार दो या अधिक स्तरों वाली होती हैं?

अ एकात्मक व्यवस्था

ब संघीय व्यवस्था

स सामुदायिक व्यवस्था

द इसमें से कोई नहीं

संघवाद

7. निम्नलिखित में से किस राज्य का गठन भाषा के आधार पर नहीं हुआ है?

(अ) नागालैण्ड
(ब) उत्तराखण्ड
(स) झारखण्ड
(द) उपर्युक्त सभी



आंध्र प्रदेश
1 Oct 1953
तेलुगू

संघवाद

8. निम्न में से कौनसा संघीय राज्य नहीं है?

अ दिल्ली

ब मणिपुर

स राजस्थान

द तेलंगाना

संघवाद

9. संविधान और विभिन्न स्तर की सरकारों के अधिकारों की व्याख्या करने का अधिकार किसके पास होता है?

(अ) न्यायालय

(ब) राष्ट्रपति

(स) प्रधानमंत्री

(द) मुख्यमंत्री

विवादों का समाधान

संघवाद

10. साथ आकर संघ बनाने का उदाहरण है–

अ भारत

ब बेल्जियम

स संयुक्त राज्य अमेरिका

द स्पेन

संघ

स्वतंत्र राष्ट्रों

→ ऑस्ट्रेलिया

→ S. Witzerland

एक ही देश में विविधता

समान विश्वास

→ भारत

स 50 स्वतंत्र राष्ट्रों

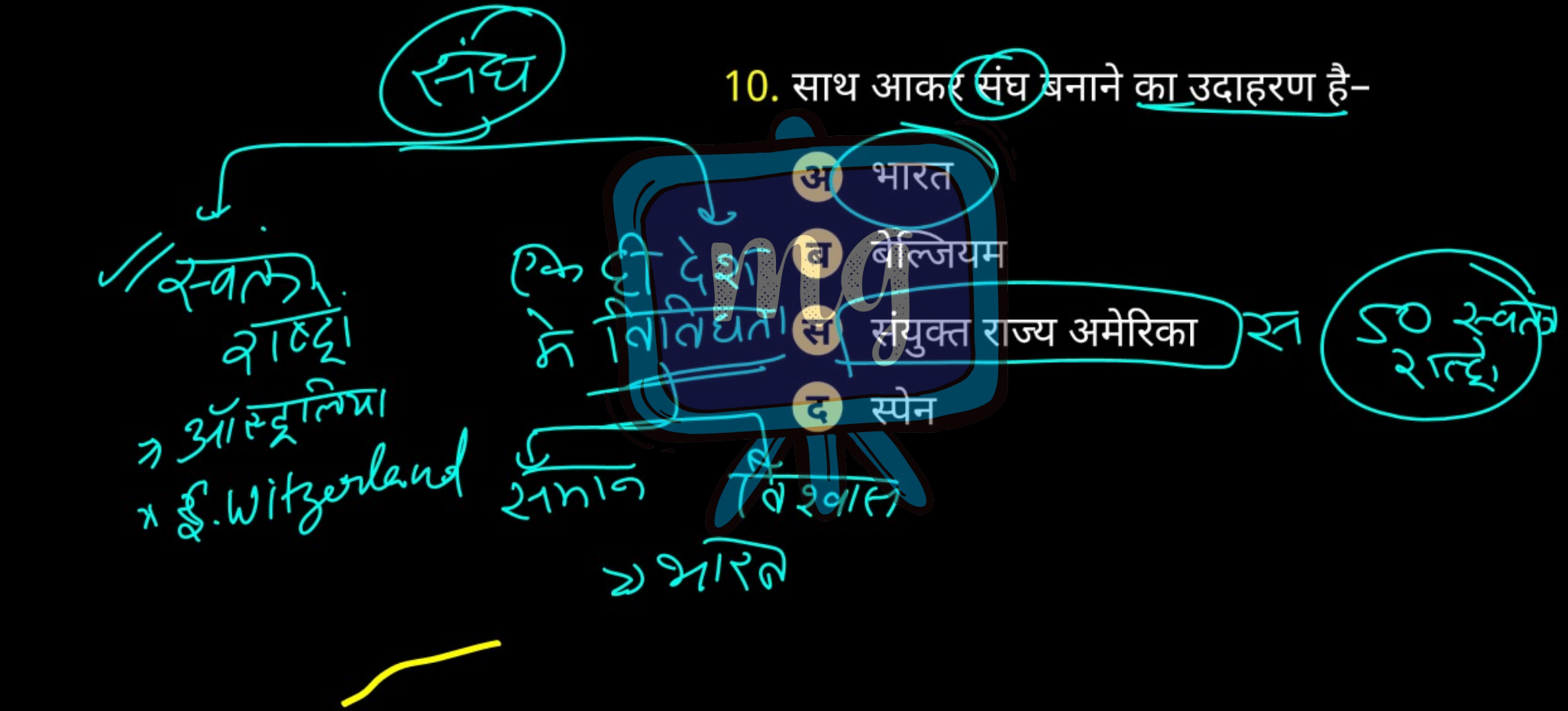

संघवाद

11. निम्न में से कौनसा राज्य साथ रहकर संघ का उदाहरण नहीं है-



(अ) भारत

(ब) स्पेन

(स) बेल्जियम

(द) स्विट्जरलैण्ड

संघवाद

12. केन्द्र एवं राज्य के मध्य विधायी अधिकारों को कितने हिस्से में बाँटा गया है?



(अ) दो
(ब) तीन
(स) चार
(द) पाँच

संघवाद

13. निम्न में से कौनसा विषय समवर्ती सूची का नहीं है?

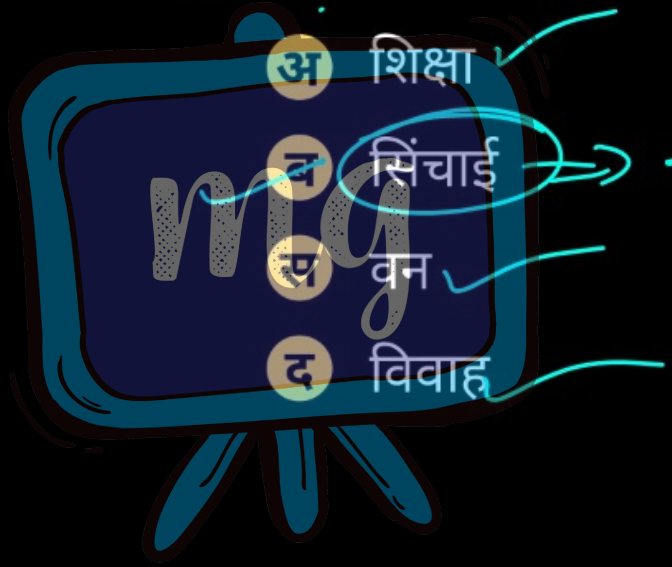

अ शिक्षा

ब सिंचाई

स वन

द विवाह

राज्य सूची

संघवाद

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. संघवाद क्या है? भारत में संघवाद का स्वरूप कैसा है? बताइए।

संघवाद

उत्तर : संघवाद का आशय संघवाद शासन की वह प्रणाली है जिसमें सत्ता का विभाजन केन्द्रीय प्राधिकार और सरकार की अंगीभूत इकाइयों के मध्य होता है।

भारत में संघवाद का स्वरूप –

(I) राज्यों का संघ – भारत में अपनी आन्तरिक विविधता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न राज्यों के संघ का गठन किया गया है।

संघवाद



(2) त्रिस्तरीय शासन व्यवस्था – भारतीय संविधान के मूल रूप से दो स्तर की शासन व्यवस्था का प्रावधान किया गया है- (i) संघ या केन्द्र सरकार (ii) राज्य सरकारें। बाद में स्थानीय शासन की संस्थाओं को तीसरे स्तर के रूप में संविधान में मान्यता दी गई।

(3) शक्तियों का विभाजन – भारतीय संविधान में स्पष्ट रूप से केन्द्र और राज्य सरकारों के मध्य विधायी अधिकारों की तीन सूचियों के द्वारा विभाजित किया गया है- (i) संघ सूची (ii) राज्य सूची (iii) समवर्ती सूची

संघवाद

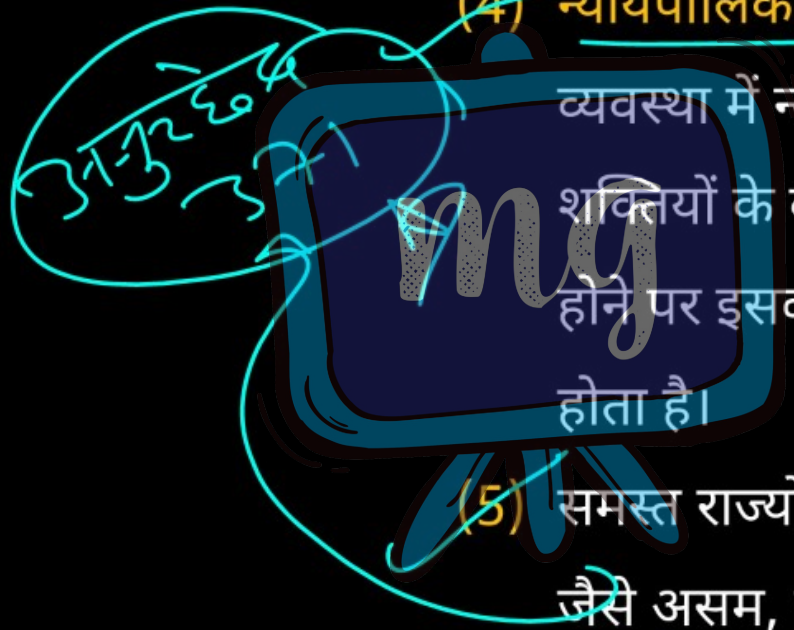

(4) न्यायपालिका की सर्वोच्चता – भारतीय संघीय व्यवस्था में न्यायपालिका स्वतंत्र व सर्वोच्च है शक्तियों के बंटवारे के संबंध में कोई विवाद होने पर इसका फैसला सर्वोच्च न्यायालय में ही होता है।

(5) समस्त राज्यों को बराबर अधिकार प्राप्त नहीं जैसे असम, नागालैण्ड, मिजोरम को अन्य राज्यों के मुकाबले विशेष अधिकार दिये गये है।

संघवाद

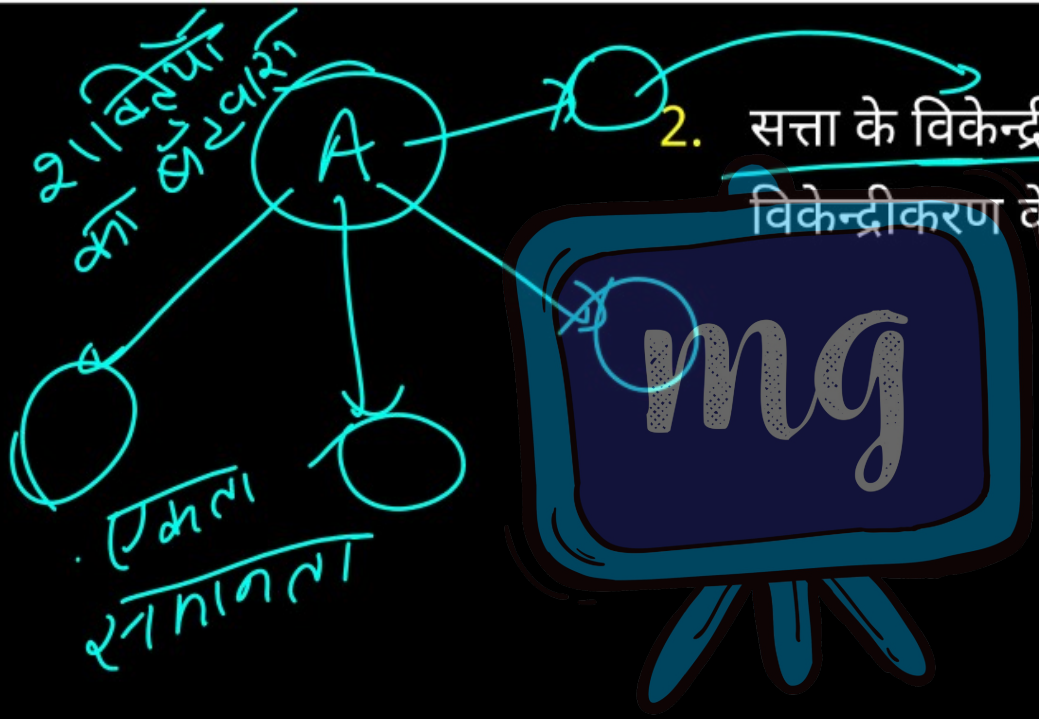

2. सत्ता के विकेन्द्रीकरण से क्या अभिप्राय है?
विकेन्द्रीकरण के पीछे बुनियादी सोच क्या है?

संघवाद

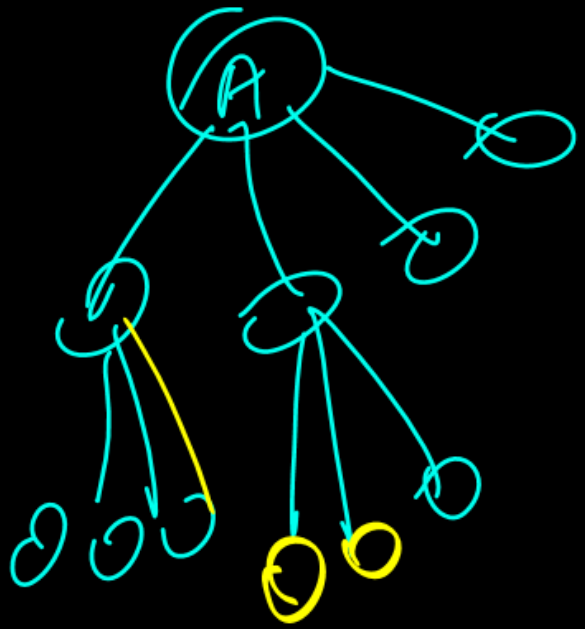

उत्तर : जब केन्द्र और राज्य सरकार से शक्तियाँ लेकर स्थानीय सरकारों को दी जाती है तो इसे सत्ता का विकेन्द्रीकरण कहते है।

भारत में संघीय सत्ता की साझेदारी तीन स्तरों पर की गई है–

1. केन्द्रीय स्तर 2. राज्य स्तर 3. स्थानीय स्तर।

ग्रामीण शहरी

संघवाद

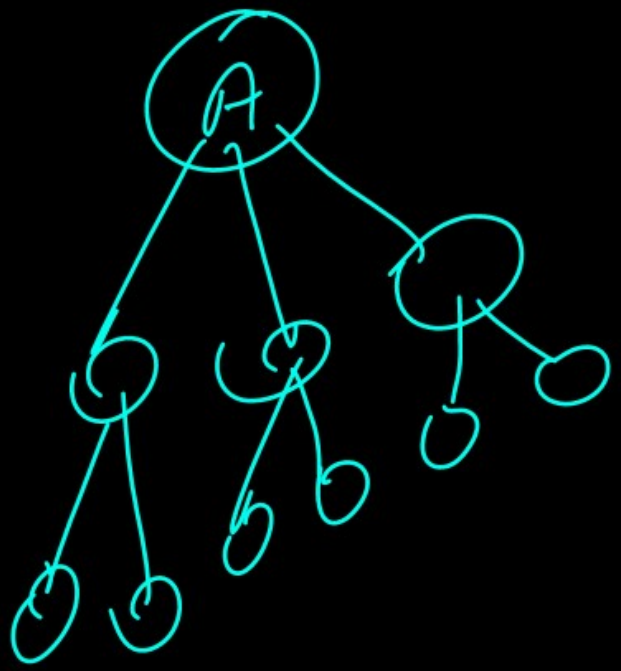

सत्ता के विकेन्द्रीकरण में प्रथम दो स्तरों केन्द्रीय स्तर पर राज्य स्तर से शक्तियाँ लेकर स्थानीय सरकारों को प्रदान की जाती है।

भारत में स्थनीय सरकारों को सन् 1992 में संविधान संशोधन के माध्यम से अधिक शक्तिशाली बनाया गया है।

विकेन्द्रीकरण के पीछे बुनियादी सोच–

(1) अनेक मुद्दों एवं समस्याओं का समाधान स्थानीय स्तर पर ही अच्छे तरीके से हो सकता है।

संघवाद

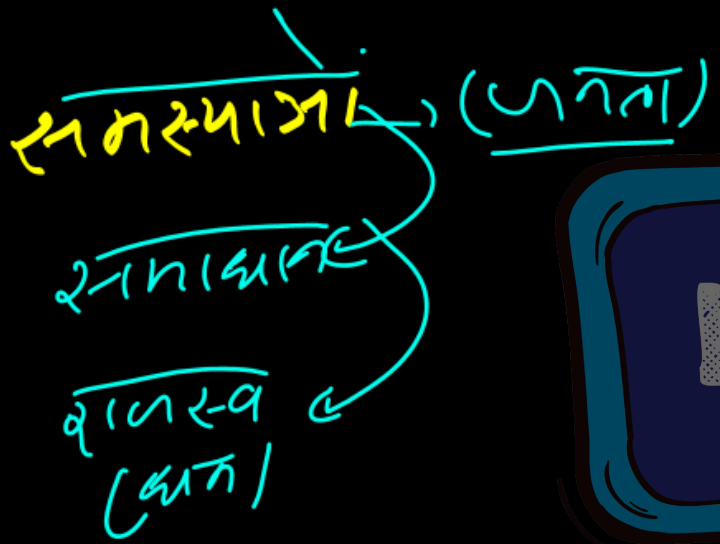

लोगों को अपने क्षेत्र की समस्याओं की अच्छी समझ होती है। लोगों को इस बात की भी जानकारी होती है कि पैसा कहाँ खर्च किया जाए और चीजों का अधिक कुशलता से उपयोग किस तरह किया जा सकता है।

(2) स्थानीय स्तर पर लोगों का नीतिगत फैसलों में सीधे भागीदार बनना भी संभव हो जाता है। इससे लोकतांत्रिक भागीदारी की आदत पड़ती है। स्थानीय सरकारों की स्थापना स्वशासन के लोकतांत्रिक सिद्धान्त को वास्तविक बनाने का सबसे अच्छा तरीका है।

संघवाद

3. शासन के संघीय और एकात्मक स्वरूपों में क्या मुख्य अन्तर है? उदाहरण से स्पष्ट करें।

संघवाद

उत्तर : संघीय शासन व्यवस्था

(1) इस शासन के स्वरूप में दो स्तरों पर सरकारें होती है तथा अपने अपने स्तर पर स्वतंत्र होकर कार्य करती है।

(2) इस व्यवस्था में राज्य सरकारों की शक्तियाँ संविधान से प्राप्त होती है।

(3) इस व्यवस्था में संघ और राज्य सरकारों के बीच विषयों का विभाजन होता है।

संघवाद

(4) इस व्यवस्था में राज्य सरकारों अपने कार्यों के लिए केन्द्रीय सरकार के प्रति जिम्मेदार नहीं होती है। इस व्यवस्था में केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को कुछ विशेष कार्य करने का आदेश नहीं दे सकती है।

उदाहरण- भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, बेल्जियम, कनाड़ा, ऑस्ट्रेलिया।

संघवाद



एकात्मक शासन व्यवस्था–

(1) इस शासन के स्वरूप में शासन का एक ही स्तर होता है तथा राज्य सरकारें उसके अधीन होकर कार्य करती है।

(2) इसमें राज्य सरकारों को अपनी शक्तियाँ केन्द्रीय सरकार से प्राप्त होती है।

(3) इस व्यवस्था में विषयों का विभाजन नहीं होता है।

संघवाद

(4) इस व्यवस्था में राज्य सरकारें अपने कार्यों के लिए केन्द्रीय सरकार के प्रति जिम्मेदार होती है।

(5) इस व्यवस्था में केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को आदेश दे सकती है।

उदाहरण– फ्रांस, इंग्लैण्ड, जापान, इटली, हॉलेण्ड

संघवाद

4. संघवाद ने जातीय समस्या को सुलझाने में बेल्जियम की सहायता किस प्रकार की?

संघवाद

उत्तर : बेल्जियम यूरोप महाद्वीप का एक देश है। सन् 1993 ई. से पहले बेल्जियम में अधिकांश शक्तियां केन्द्र सरकार के हाथों में थी। प्रान्तीय सरकारों को नाममात्र के अधिकार प्राप्त थे पर ये अधिकार उनको केन्द्र सरकार द्वारा दिए गए थे और इन्हें केन्द्र सरकार वापस भी ले सकती थी।

बेल्जियम में एकात्मक सरकार थी।

संघवाद

1993 ई. में संविधान संशोधन करने के पश्चात् बेल्जियम में प्रान्तीय सरकारों को कुछ संवैधानिक अधिकार प्रदान किये गये।

इन अधिकारों के लिए प्रान्तीय सरकारें अब केन्द्र पर निर्भर नहीं रही।

इस प्रकार बेल्जियम ने एकात्मक शासन के स्थान पर संघीय शासन प्रणाली को अपनाया जिससे जातीय समस्या के समाधान में सहायता प्राप्त हुई।

संघवाद

5. भारतीय संविधान में केन्द्र-राज्य सरकारों के मध्य विधायी अधिकारों को कितने भागों में बांटा गया है? विवरण दीजिए।

संघवाद

उत्तर : विधायी अधिकारों को तीन भागों में बाँटा गया है-

संघ सूची – राष्ट्रीय महत्व के विषय केन्द्र सरकार की –प्रतिरक्षा, विदेश, बैंकिग, संचार, मुद्रा।

राज्य सूची – स्थानीय महत्व के विषय राज्य सरकारों की -पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि, सिंचाई।

संघवाद

समवर्ती सूची – केन्द्र और राज्य दोनों कानून बना सकते है लेकिन टकराव की स्थिति में केन्द्र द्वारा निर्मित कानून ही मान्य होता है- शिक्षा, वन, मजदूर संघ, विवाह, उत्तराधिकार।

संघवाद

6. भारत में विकेन्द्रीकरण लागू करने के औचित्य का वर्णन कीजिए।



उत्तर : जब केन्द्र और राज्य सरकार से शक्तियां लेकर स्थानीय सरकारों को दी जाती है तो इसे सत्ता का विकेन्द्रीकरण कहते है।

भारत में सत्ता की साझेदारी तीन स्तरों पर की गई है (1) केन्द्रीय स्तर (2) राज्य स्तर (3) स्थानीय स्तर।

भारत में स्थानीय सरकारों को सन् 1992 में 73वें संविधान संशोधन के माध्यम से अधिक शक्तिशाली बनाया गया है।

संघवाद

विकेन्द्रीकरण के पीछे बुनियादी सोच :

(1) अनेक मुद्दों एवं समस्याओं का समाधान स्थानीय स्तर पर ही अच्छे तरीके से हो सकता है लोगों को अपने क्षेत्र की समस्याओं की अच्छी समझ होती है। लोगों को यह जानकारी होती है कि पैसे कहां खर्च करने है और चीजों को अधिक कुशलता से कैसे उपयोग कर सकते है।

संघवाद

(2) स्थानीय स्तर पर लोगों का नीतिगत फैसलों में सीधे भागीदार बनना भी संभव हो जाता है। स्थानीय सरकारों की स्थापना स्वशासन के लोकतांत्रिक सिद्धान्त को वास्तविक बनाने का सबसे अच्छा तरीका है।

संघवाद

7. भारत में केन्द्र-राज्य सम्बन्धों में आये बदलावों से संघीय व्यवस्था में सत्ता की साझेदारी आज ज्यादा प्रभावी है। स्पष्ट करें।

संघवाद

उत्तर : भारत में केन्द्र-राज्य संबंधों में लगातार आये बदलावों के कारण व्यवहार में संघवाद बहुत मजबूत हुआ है और आज उनके बीच सत्ता की साझेदारी ज्यादा प्रभावी है। स्वतंत्रता के पश्चात् काफी लम्बे समय तक हमारे यहां एक ही पार्टी की केन्द्र और अधिकांश राज्यों में शासन रहा, इसका व्यवहारिक प्रभाव यह पड़ा कि राज्य सरकारों ने स्वायत्त संघीय इकाई के रूप में अपने अधिकारों का प्रयोग ही नहीं किया।

संघवाद

इसके बाद जब केन्द्र और राज्य में अलग-अलग दलों की सरकारें बनी तो केन्द्र सरकार ने राज्यों के अधिकारों की अनदेखी करने की कोशिश की। उन दिनों में केन्द्र सरकार अक्सर संवैधानिक प्रावधानों का दुरूपयोग करके विपक्षी दलों की राज्य सरकारों की भंग कर देती थी। यह संघवाद की भावना के प्रतिकुल काम था।

संघवाद

सन् 1990 के बाद से इस स्थिति में कुछ सुधार आया। इस अवधि में देश में अनेक राज्यों में क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ। इसी दौर में केन्द्र में गठबंधन सरकारों की शुरूआत हुई। चूंकि किसी एक दल को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत नहीं मिला इसलिए प्रमुख राष्ट्रीय पार्टियों को क्षेत्रिय दलों समेत अनेक पार्टियों का गठबंधन बनाकर सरकार बनानी पड़ी इससे सत्ता में

संघवाद

साझेदारी और राज्य सरकारों की स्वायत्ता का आदर करने की नई संस्कृति पनपी। इसी बीच सर्वोच्च न्यायालय के फैसलों से राज्य सरकारों को मनमाने ढंग से भंग करना केन्द्र सरकार के लिए मुश्किल हो गया। इस प्रकार आज संघीय व्यवस्था के तहत सत्ता की साझेदारी संविधान के लागू होने के तत्काल बाद वाले दौर की तुलना में ज्यादा प्रभावी है।